P: ISSN NO.: 2394-0344 RNI No.UPBIL/2016/67980 VOL-2* ISSUE-8* November- 2017
E: ISSN NO.: 2455-0817 Remarking An Analisation

हिन्दी शिक्षण और अनुवाद का सहसंबंध

सविता अधाना
सह–प्रवक्ता,
हिन्दी विभाग,
इन्दिरा गाँधी विश्वविद्यालय,
मीरपुर, रेवाड़ी

सारांश

आज जहाँ सारा विश्व ग्लोबल विलेज या भूमण्डलीकरण की अवधारणा पर श्वास ले रहा है। ऐसे में हमें एक दूसरे के और निकट लाने का काम हमारी भाषा की अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर बढ़ती पहचान और उसकी बढ़ती लोकप्रियता भी एक प्रमुख कारण है। उसकी बढ़ती लोकप्रियता भी एक प्रमुख कारण है। मानव स्वभाव से मिलनसार व एक दूसरे को जानने का जिज्ञासु हमेषा से रहा है, हमारे लोग, समाज देश आदि सभी का संबंध अटूट हैं अनुवाद एक ऐसा माध्यम है जो हमें मानव समुदाय से और अधिक जोड़ता है। विश्व की सभी अच्छी, बुरी, प्रेरणादायक, आन्दोलित और जानकारी से परिपूर्ण रचनाओं का अनुवाद करा कर हम लाभांवित होते है। आज सूचना व प्रौद्योगिकी का युग है ऐसे में सूचनाओं के आदान–प्रदान में भी अनुवाद अपनी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह कर रहा है।

मुख्य शब्द : हिन्दी शिक्षणके आवश्यक कारक, हिन्दी शिक्षण में अनुवाद की सम्भावनाएं व कार्य, भारतीय अनुवाद परिषद के मुख्य बिन्दु, कार्यक्रम व पाठ्यक्रम।

प्रस्तावना

भारतीय प्राचीन शिक्षा पद्वति गुरू शिष्यपरम्परा व गुरूकुल शिक्षा के रूप में प्रचलित थी जहाँ गुरू द्वारा बोले गए ज्ञान को शिष्य अपने कानों से सुनकर उसे आत्मसात करते थे। हमारी शिक्षण स्वरूप आज बिल्कुल ही बदल गया है जहाँ पहले एक गुरू की परम आवश्यकता थी वही आज के शिष्य गुरू से शिक्षा प्राप्त कर रहे है। आज शिक्षण बहुत बदल गया है जैसा कि हम जानते है कि शिक्षा केवल गुरू तक ही सीमित नहीं रह गई है ऐसे में देश विदेश की उपयोगी व जानकारीपरक पुस्तकों का ज्ञान भी हम अनुवाद के माध्यम से ग्रहण कर रहे है।

अतः आज के संदर्भ में शिक्षणमें अनुवाद की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका बन गई है।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तावित अध्ययन के विशिष्ट उद्देश्य निम्नवत् प्रस्तुत है।

1. भाषा को परिभाषित कर भाषा की आवश्यकता पर ध्यान आकर्षित करना।
2. हिन्दी भाषा शिक्षण की उपयोगिता और सावधानियों से पाठकों को अवगत कराना।
3. हिन्दी भाषा शिक्षण के साथ अनुवाद, प्रक्रिया का सम्बन्ध और अनुवाद को परिभाषित करते हुए इसके साधनों प्रयोजनों को रेंखाकित करना।
4. वर्तमान में अनुवाद से सम्बन्धित पाठ्यक्रमों व कार्यक्रमों पर पाठक का ध्यान आकर्षित करना।

उपकल्पना

प्रस्तावित शोध के विषय में यह परिकल्पना ली गई है कि मानव की भाषा और अभिव्यक्ति को कौन–कौन से अन्य साधनों से और अधिक पुष्ट किया जा सकता है।

शोध प्रविधि

प्रस्तावित शोध पत्र की अध्ययन विधि मुख्य रूप से परिचात्यामक व व्याख्यात्मक है जो सरकारी एवं गैर सरकारी स्त्रोतों से प्राप्त सूचनाओं हेतु पुस्तकों, शोधपत्रों, इंटरनेट आदि का आश्रय लिया गया है।

साहित्यावलोकन

विचारों की भाषा बहता हुआ नीर है और मानव के अभिव्यक्ति का साधन है। मनुष्य पृथ्वी का एक मात्र प्राणि है जो अपने मन के भावों और भावनाओं की संवेदना को शब्द रूप में अपनी वाणी से प्रकट कर पाता है। सामाजिक होने के नाते हमारा व्यवहार मिलन सार है जो हम अपनी भाषा के

माध्यम से प्रकट करते है। भाषा को परिभाषित करते हुए पं0 कामताप्रसाद ने शुरू में कहा है, 'भाषा वह साधन है जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचार दुसरों पर भलीभाँति प्रकट कर सकता है और दूसरों के विचार आप स्पष्टया समझ सकता है। (भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी पृ0–18, डॉ0 नेरश मिश्र अभिनव प्रकाशन दिल्ली रोहतक)[1]

वही दुनीचन्द जी ने 'हम अपने मन के भाव प्रकट करने के लिए जिन सांकेतिक ध्वनियों का उच्चारण करते है, उन्हें भाषा कहते है। के रूप में प्रकट किया है। (वहीं पृष्ठ 19)[2]

भाषा के यादृच्छिक रूप के कारण भाषा अनेक रूपों में निर्मित हुई जैसे अंग्रेजी, हिन्दी, संस्कृति, फेंच, स्पेनिष आदि परन्तु सभी में कही ना कही जुड़ाव है। उपरान्त हमारे भाव हँसना, रोना, क्रोधित होना है एक जैसे है। ''यादृच्छिक का अर्थ हैं– जैसी इच्छा हो या 'माना हुआ'। यह यादृच्छिक शब्द पदक्रम, रूप रचना इन सभी स्तरों में देखी जाती है उदाहरण पानी–हिन्दी भाषा भाषी] Water–अंग्रेजी भाषा भाषी, आव–फारसी भाषा भाषी, वदा–रूसी भाषा भाषी। हमारी भाषा हिन्दी हैं जो समूचे भारत में हिन्दी से बोली जाती है हिन्दी भाषा हमारी राजभाषा है। (अवलोकन हिन्दी भाषा और साहित्य पृं0 1 डॉ0 अरविन्द कुमार Lucent Publication, Bihar)[3]

''भाग – 17, अध्याय 1
अनुच्छेद 343 संघ की राजभाषा''

(''संघ की राजभाषा हिन्दी और लिपि देवनागरी होगी। उनका रूप भारतीय अंको का अंतर्राष्ट्रीय रूप होगा।'') (सामान्य हिन्दी पृ0 9 संजीव कुमार Lucent Publication, Bihar)[4]

''हिन्दी भाषा की ध्वनियों का सबसे प्राचीन वर्गीकरण 'स्वर' और व्यंजन रूप में मिलता है भारत में यो तो स्वर तथा व्यंजन के अन्तर के संकेत पहले भी (ब्राह्मणों और आरण्यकों में) मिलते है।'' (भाषा विज्ञान पृ0 306 डॉ0 भोलानाथ तिवारी कितान महल)[5]

हिन्दी भाषा के शिक्षणके लिए अध्यापक को बहुत अधिक तैयारी व भाषा से सूक्ष्म रूप का विशेषज्ञ होना चाहिए। इसमें भाषा शिक्षण में 'भाषा विज्ञान' बहुत सहायता करता है। यह वह विषय है जो भाषा के सूक्ष्म से सूक्ष्म व उसकी आन्तरिक व बाह्य संरचना की नींव को जानने में मदद करता है। जैसे 'भाषा के अर्थ में हिन्दी का प्रयोग फारस और अरब से होता है। अरबी फारसी में जबाने–हिन्दी शब्द का प्रयोग सम्भव भारत की समस्त भाषाओं संस्कृत, पालि, प्राकृत, अपभ्रंश के लिए किया गया है' (हिन्दी भाषा एवं साहित्य का पृ0 22 गोविन्द पाण्डेय अभिव्यक्ति प्रकाशन भवस्तुनिष्ट इतिहास)[6]

हिन्दी भाषा के निकटतम बोली खड़ी बोली है और हिन्दी का मानक रूप इसी से प्राप्त हुआ है हिन्दी और खड़ी बोली का एक उदाहरण देखिए 'रानी केतकी की कहानी' में लेखक इंसा उल्लाह द्वारा–

यह वह कहानी है कि जिसमें 'हिन्दी छूटा और न किसी बोली का मेल है न पुटा।' (हिन्दी का गद्य साहित्य पृ0 18 61 रामचन्द्र तिवारी विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)[7]

आज हिन्दी भाषा काफी समृद्ध भाषा बन चुकी है जहाँ तक हिन्दी भाषा का प्रश्न है यह संसार की प्रमुख भाषाओं में से एक भाषा है। आज वैज्ञानिक पद्धति के कारण सम्पूर्ण संसार एक परिवार बन रहा है। हम किसी भी देश के समाचारों को घर बैठे सुन सकते है तथा यहाँ के निवासियों और क्षेत्रों को दूरदर्शन पर देख सकते है। परन्तु भाषा अलग होने के कारण हमें अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है। अनुवाद द्वारा हम विदेशी भाषाओं की अभिव्यक्ति को पढ़कर समझते है तथा उसके अर्थ को ग्रहण करते है परन्तु अनुवाद कोई आसान काम नहीं है। एक सफल अनुवादक को एक भाषा के भावों तथा विचारों को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना होता है।

हिन्दी शिक्षण में अनुवाद का विशेष महत्व है। इसके लिए कोष, थिसॉरस, कम्प्यूटर आदि का सहयोग लिया जा सकता है। इनको हम अनुवाद शिक्षणका साधन कहते है। कोष को अंग्रेंजी Dictionary कहते है प्रो0 राजमणि शर्मा ने कोष की परिभाषा देते हुए लिखा है – 'ऐसा ग्रंथ जिसमें वर्णाकूल प्रयोगत अथवा संदर्भ सापेक्ष विभिन्न अर्थ दिये गये हो, कोष कहलाते है।'' (हिन्दी शिक्षण पृ0 176 डॉ0 पवन कुमार यादव लक्ष्मी बुक डिपो भिवानी)[8]

हिन्दी शिक्षणमें अनुवाद की विभिन्न विधियों को अपनाया जाता है जैसे शब्दानुवाद, भावानुवाद, छायानुवाद, सारानुवाद, व्याख्यानुवाद, छायानुवाद के विषय में डॉ0 भोलानाथ तिवारी लिखते हैं– छायानुवाद ऐसे अनुवाद को तरह मूल के शब्दों का अनुसरण न करें अपितु दोनों पृष्टियों से मुक्त होकर उसकी छाया लेकर चले।' (वही पृ0 178)[9]

अनुवाद शब्द अनु + वय को मिलने से बना है इसका अर्थ बताने वाले वाक्य या पुनरूक्ति या किसी निष्चित अर्थ को पुनः कहना है। अनुवाद शब्द का इतिहास बहुत लम्बा है आज अनुवाद का अर्थ यही लिया जाता है कि एक भाषा की सामग्री को दूसरी भाषा में रूपांतरित करना ताकि पाठक मूल भाषा की पाठ सामग्री को समझ सकें।

एक अच्छे अनुवादक व अनुवाद में अनेक विषेशताएं होती है जैसे ईमानदारी, स्त्रोत भाषा, लक्ष्य भाषा का समुचित ज्ञान होना चाहिए, भाषा के लोकोक्तियों मुहावरों का ज्ञान भी होना चाहिए, सरल स्पश्ट अनुवाद करना कर्तव्य निश्ठा, विषय वस्तु का ज्ञान आदि महत्वपूर्ण विशेषताएँ होनी चाहिए।

आज की रोजगारोन्मुख एवं प्रतिस्पर्धात्मक स्थिति को देखते हुए हिन्दी भाषा के एक नवीन दृष्टि और दिशा देना महत्वपूर्ण हो जाता है चाहे वह भाषा का सैद्धान्त्रिक दृष्टिकोण हो या अनुप्रयोगात्मक क्षेत्र अथवा अभियान्त्रिक या प्रौद्योगिक पक्ष इनसे जुड़े बिना आज हिन्दी का समुचित विकास तथा संवर्धन संभव नहीं हो सकता। हिन्दी भाषा को वैश्विक दृष्टि से भाषा के रूप में स्थापित करने के लक्ष्य प्राप्ति हेतु भाषा एवं अनुवाद विभाग की स्थापना की गई है। भाषा एवं अनुवाद के समकक्ष आवश्यकता अनुसार आधुनिक व समृद्ध विभागीय प्रयोगशाला की स्थापना पर कार्य प्रारम्भ हो चुका है। हिन्दी भाषा को आज के समय की मांग के अनुरूप

विशाल व आधुनिक रूप प्रदान करने में यह विभाग प्रयत्नोमुखी है। इस विभाग की उपलब्धियां यह निर्धारित की गई है–

1. यह विभाग विभिन्न ज्ञान अनुशासनों में अनुवाद प्रक्रिया का विकास करेगा।
2. दूसरा कार्य अनुवाद के माध्यम से अंग्रेजी एवं अन्य विदेशी भाषाओं तथा भारतीय भाषाओं की शिक्षण सामग्री को हिन्दी में बदलेगा।
3. अनुवाद विभाग हिन्दी से विदेशी एवं भारतीय भाषाओं में यंत्रानुवाद की प्रक्रिया का विकास करेगा।
4. अनुवाद विभाग विदेशी एवं भारतीय भाषाओं में हिन्दी दुभाषिये तैयार करेगा।

इन सब बातों के साथ–साथ अनुवाद विभाग आधुनिक भारत की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं प्रयोजन परक प्रविधियों से जोड़ते हुए उसके व्यावहारिक पक्ष को विकसित करेगा।

भारतीय अनुवाद विभाग से आशा है कि वह भारतीय और विश्व के परिपृथ्य में हमारी हिन्दी भाषा को अनुवाद के माध्यम से सम्पन्न और समर्थ भाषा बनाएगा।

इसका एक अन्य महत्वपूर्ण कार्य यह होगा कि यह अनुवाद विभाग अनुशासन को विदेशी और द्वितीय भाषा शिक्षणमें एक प्रमुख उपकरण के रूप में विकसित करेगा।

हमारे यहाँ विभिन्न विश्वविद्यालय अपने पाठ्यक्रम में अनुवाद विषय की परीक्षाएं और कार्यशालाएं आयोजित कर रहा है जैसे अटल बिहारी वाजपेयी हिन्दी विश्वविद्यालय 'भोपाल' स्नानकोत्तर पत्रोपाधि अनुवाद के क्षेत्र में प्रदान कर रहा है। आज अनुवाद के क्षेत्र में असीम संभावनाओं को देखा जा सकता है। इसी कारण युवाओं का ध्यान इस तरफ आकर्षित हुआ है। हमारे या अनुवाद क्षेत्र में प्रचारित पाठ्यक्रम जो संचालित हो रहे है इस प्रकार हैं–

प्रशिक्षण कार्यक्रम

हिन्दी, अंग्रेंजी

प्रमाण पत्र–

जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेंजी, संस्कृत, हिन्दी पालि, प्राकृत, हिन्दी शीघ्र लेखन, हिन्दी बोली, अनुवाद व विदेशी छात्रों के लिए हिन्दी भाषा।

पत्रोपाधि (डिप्लोमा)

जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेजी, संस्कृत, हिन्दी मरीठी पालि, प्राकृत, हिन्दी बोली अनुवाद विज्ञान, विदेशी छात्रों के लिए।

हिन्दी भाषा हिन्दी बोली।

स्नातकोत्तर (एम0ए) अनुवाद विज्ञान

स्नातकोत्तर पत्रोपाधि

अनुवाद सिद्धान्त और व्यवहार, जर्मन, फ्रेंच, अंग्रेंजी हिन्दी में प्रादान की जा रही है। अनेक भारतीय विश्वविद्यालय व कॉलेज ने इन पाठ्यक्रमों को अपने यहाँ शुरू किया हुआ है और विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो रहे है।

इन पाठ्यक्रमों में प्रवेश हेतु थी शैक्षिक संस्थानों ने प्रवेश पात्रता रखी है जो इस प्रकार है–

प्रवेश पात्रता –

प्रमाण पत्र	–	10+2 परीक्षा उत्तीर्ण
डिप्लोमा	–	स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण
स्नातकोत्तर	–	स्नातक परीक्षा

एम.फिल और पी.एच.डी. पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा निर्धारित मानदण्ड मान्य होंगे।

निष्कर्ष

भारतीय हिन्दी अनुवाद पद्धति में मशीनी अनुवाद का भी सूत्रपात हुआ। वर्तमान वैज्ञानिक युग में मानव नए नए संदर्भो से सुपरिचित होना चाहता है। प्रौद्योगिकी क्रान्ति के साथ मशीनी अनुवाद की अपेक्षा हुई है। मशीनी अनुवाद मानव से कही अधिक जल्दी अनुवाद कर पाता है। ''मशीनी अनुवाद का प्रारम्भ 20 वीं शताब्दी के पांचवे दशक से मान सकते है। वैसे इसका प्रारम्भ सन् 1993 में हो चुका था।'' (भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा पृ0 363 डॉ0 नरेश मिश्र अभिनव प्रकाशन दिल्ली)[10]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *भाषा विज्ञान और मानक हिन्दी पृ0–18, डॉ0 नरेश मिश्र अभिनव प्रकाशन दिल्ली रोहतक*
2. *वहीं पृष्ठ 19*
3. *अवलोकन हिन्दी भाषा और साहित्य पृं0 1 डॉ0 अरविन्द कुमार* Lucent Publication (Bihar)
4. *सामान्य हिन्दी पृ0 9 संजीव कुमार* Lucent Publication (Bihar)
5. *भाषा विज्ञान पृ0 306 डॉ0 भोलानाथ तिवारी कितान महल*
6. *हिन्दी भाषा एवं साहित्य का पृ0 22 गोविन्द पाण्डेय अभिव्यक्ति प्रकाशन वस्तुनिष्ट इतिहास*
7. *हिन्दी का गद्य साहित्य पृ0 18 61 रामचन्द्र तिवारी विश्वविद्यालय प्रकाशन वाराणसी*
8. *हिन्दी शिक्षण पृ0 176 डॉ0 पवन कुमार यादव लक्ष्मी बुक डिपो भिवानी*
9. *वही पृ0 178*
10. *भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा पृ0 363 डॉ0 नरेश मिश्र अभिनव प्रकाशन दिल्ली*